मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 103, फरवरी(द्वितीय), 2021

आशीर्वाद

राकेश कुमार तगाला

रीमा,इस बार तुमने कौन सी परीक्षा दी हैं?अंजली जी जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेती,परीक्षा तो चलती ही रहेगी।मुझें पूरा विश्वास है,तुम जल्दी ही अपना लक्ष्य प्राप्त कर लोगी।अंजली जी से बात करके,रीमा का मन बहुत खुश हो जाता था।अंजली जी,उनके घर के सामने वाली कॉलोनी में रहती थी। दोनों में थोड़ी बहुत बातचीत होती थी। क्योंकि अंजली जी, किसी के घर तक आती-जाती नहीं थी? वह अपने परिवार में मग्न रहती थी।

कई परीक्षाओं के परिणाम आ रहे थे।पर रीमा लगातार असफल हो रहीं थी।उसका मन बहुत दुखी था,परिवार के सभी लोग ताने मार रहे थे। तुम्हारा ध्यान कहाँ रहता है,रीमा? जरूर तुम्हारी कोशिशों में कमी है।हम घर का सारा काम करते हैं,ताकि तुम ज्यादा से ज्यादा समय अपनी तैयारी कर सको।पर पता नहीं तुम क्या कर रही हो?अब तुम्हें आखिरी प्रयास करना होगा।समझी रीमा,माँ चिल्लाई! तुम्हें अंजली जी से ही कुछ सीखना चाहिए।माँ आप सही कह रही हो। मैं इस बार पूरा प्रयास करूंगी।आपको निराश नहीं करूंगी। चाहे कुछ भी हो जाए,वह एक साँस में सब कुछ कह गई। वह जानती थी,यह सब इतना आसान नहीं होगा।उसके मेहनत में कोई कमी नहीं थी।पर उसे सफलता नहीं मिल रही थी।वह भाग्य को दोष दे रही थी। पहले वह कभी भाग्य को नहीं मानती थी।फिर आज क्यों? वह अंजली जी के बारे में सोच रही थी।वह बहुत मेहनती हैं,एक प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में प्रधान संपादिका के पद पर हैं।उन्होंने बीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। प्रतिभा उनके अंदर कूट-कूट कर भरी पड़ी हैं।पर मुझें एक बात कभी समझ नहीं आती कि वह इतना सब कैसे कर लेती है? मन करता हैं, उनके घर जाकर उनसे सलाह लूँ।शायद उनके मार्गदर्शन से मैं सफलता प्राप्त कर सकूं। वैसे भी अगर इस बार मैंने परीक्षा में सफलता प्राप्त नहीं की तो मम्मी कालका प्रसाद से मेरी शादी कर देगी। वो मुझें फूटी आँख नहीं सुहाता।जब देखो छेड़ता रहता हैं, कब तक बचकर रहेगी? शादी तो तुम्हारी मुझसे ही होगी। तुम्हारी बहन भी शादी से पहले बड़ी अकड़ती थी कि हमारे घर की बहू नहीं बनेगी, बन गई ना मेरी भाभी।अब देखो कितनी खुश है?

मेरी दीदी कालका प्रसाद के घर खुश थी। मेरे जीजा जी भी कालका प्रसाद की तरह ही थे,उन्हें बोलने की तमीज तक नहीं थी। दोनों भाइ हमेशा घटिया हंसी-मजाक करते थे।उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था कि सामने वाला क्या सोच रहा है?दोनों अपनी ही धुन में रहते थे।पूरा का पूरा खानदान ही एक नंबर का पागल लगता था। उनके साथ रहकर दीदी भी फूहड़ हो गई थी।कहावत भी है ना कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। दीदी भी पूरी तरह उनके रंग में रंग गई थी।

पहले उनका स्वभाव बड़ा ही शालीन था।थोड़ा बोलना बढ़िया बोलना,कुछ कुछ अंजली जी जैसा।शाम को मम्मी से पूछकर अंजली जी के घर जाऊंगी। वैसे मम्मी को हमारा किसी के घर आना-जाना पसंद नहीं था।वह हमेशा ही लड़कियों को बंदिश में रखना पसंद करती थी।वह मुझ पर खास नज़र रखती थी।हमेशा कहती है,अगर कुछ भी ऐसा वैसा किया तो तेरी खैर नहीं।

तुम्हारे पास सिवाय कालका प्रसाद के कोई रास्ता नहीं बचेगा,समझी।मम्मी के इस तरह के बर्ताव से मेरा मन खिन्न हो जाता था।जब देखो कालका प्रसाद का नाम लेकर मुझ पर दबाव बनाती रहती थी।कभी-कभी इसका दूसरा पहलू भी मैं सोचती थी।क्या सचमुच कालका प्रसाद इतना बुरा है? व्यापारी है,पूरी मंडी में उसका नाम है।जब भी हमारे घर आता है।सब्जियों का ढेर लगा देता है।मम्मी तो उसे मना करती है कि हम बेटियों के घर की कोई चीज नहीं ले सकते। पर वो मानता कहाँ है?

बस यही कहता है इसी बहाने आपसे मिलना हो जाता है। मुझें सारा पता है वह किससे मिलने आता है?अकेले में मौका पाकर मुझें छेड़ता रहता।नाम भी नहीं लेता,सिर्फ इतना ही कहता हैं। मेरी जान आओ तुम्हें घुमा लाऊँ।जब मैं चिल्लाती हूँ।चुप करो तुम,फिर वह बात पलट देता हैं। अरे रीमा जी आपकी दीदी आपको याद कर रही थी।चलो कभी हमारे गरीब खाने पर भी।हमारा गरीब खाना भी स्वर्ग बन जाएगा।मैं हँसे बिना नहीं रह पाती,पीछा छुड़ाने के लिए मैं भी कह देती हूँ।देवी एक दिन अवश्य दर्शन देगी।फिर खुद ही हँस पड़ती हूँ,अपनी ही बात पर।

मम्मी क्या मैं अंजली जी के घर चली जाऊं? क्यों,क्या काम है? मैं चुप हो गई फिर कुछ देर सोचने के बाद माँ खुद ही बोल पड़ी,जल्दी आ जाना।मम्मी एक बात पूछूं,अगर बुरा ना मानो तो,हाँ-हाँ पूछ ले वरना तेरा खाना नहीं पचेगा।माँ तुम मेरी इतनी चिंता क्यों करती हो?चिंता क्यों ना करूँ? मेरी बेटी फूलों जैसी है।तुम्हारे जैसी सुंदर लड़की दूसरी नहीं है। माँ क्या आप सच कह रही हो?हाँ मेरी गुलाबो,माँ प्यार से मुझें गुलाबो ही कहती थी।अच्छा अब सवाल-जवाब बंद कर दो।जल्दी आना। ठीक है माँ। मैं तैयार होकर निकल पड़ी।अंजली जी का घर अधिक दूर नहीं था। रास्ते में लड़के मुझें आँखे फाड़ कर देख रहे थे।मैंने किसी को कहते भी सुना,अगर ये मेरी रानी बन जाए तो मजा आ जाएगा। पर मैं आगे

बढ़ती जा रही थी।मैं अंजली जी के घर के दरवाजे पर पहुंच गई।बेल बजाई पर कोई जवाब नहीं मिला। दोबारा बेल बजाई तो गेट धीरे से खुला।और मेरे सामने दस साल का लड़का खड़ा था। दीदी किस से मिलना है?अंजली जी से, पर वो तो घर पर नहीं है। तभी अंदर से आवाज आई,अंदर आ जाओ। वह अभी आती ही होगी। आवाज किसी अधेड़ उम्र की महिला की थी। मैं अंदर चली गई। बैठो बेटी,मैडम आती ही होगी। जी कह कर मैं एक बड़े से कमरे में बैठ गई।

कमरा क्या था?लाइब्रेरी थी पूरी, किताबों से अलमारियाँ भरी पड़ी थी। मेज पर बहुत सारी पत्रिका पड़ी थी। एक तरफ पत्रों का ढेर, बंद लिफाफे,नए पुराने समाचार-पत्र मुझें ही देख रहे थे।तभी वह लड़का मेरे सामने एक गिलास पानी लिए खड़ा था। मैंने पानी का गिलास हाथ में लिया।पर मेरा ध्यान अब भी किताबों पर लगा था।मुझें किताबों का साथ बहुत अच्छा लगता था।

अरे आप कब आई? मैं हैरान हूँ! आप तो कभी घर से बाहर नहीं निकलती।जी,आपसे कुछ काम था।पहले ब्लैक कॉफी फिर बात करते हैं।जैसा आप ठीक समझे। हम दोनों ने कॉफ़ी पी। तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी,बेटी मिल गई अंजली जी।हाँ,माँ मेरे सामने ही बैठी हैं।ठीक है, बेटी जल्दी घर आ जाना।जी, मैंने संक्षिप्त सा जवाब दिया।अंजली जी, आज मेरे मन बहुत उदास है।

सभी परीक्षाओं का नतीजा आ गया है।मैं असफल रही हूँ। कोई बात नहीं तुम समझदार हो।इन छोटी-छोटी परेशानियों से चिंतित क्यों हो?आगे बढ़ती रहो परेशानियों की तरफ ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या आपके जीवन में कभी परेशानी आई थी?परेशानी सभी के जीवन में आती है।मैं भी इससे अछूती नहीं हूँ।बड़ों के आशीर्वाद से मैंने सफलता पाई हैं।मेहनत तो सभी करते हैं।

रीमा,मुझें आज भी याद है। जब मेरी शादी उड़ीसा के एक पिछड़े परिवार से हुई थी।यह एक बेमेल विवाह था।मैं पढ़ी- लिखी थी।और मेरे पति बिल्कुल निपट,यानी अँगूठा टेक। शुरु-शुरु में तो मैं उनसे ढंग से बातचीत भी नहीं करती थी। मेरा मन बेचैन रहता था। मन करता था सब छोड़-छाड़ कर भाग जाऊं।पर मैंने समझौता कर लिया।

कभी-कभी हालात बड़े नाजुक हो जाते हैं।एक सही या गलत फैसला आपके जीवन को बदल सकता है।और अगर फैसला गलत हो गया तो,फिर जीवन भर पछतावा रहेगा। अपनी गलती पर खुद को कोसते रहो।आप सही कह रही हो।मैं आप से पूरी तरह सहमत हूँ।क्या आपने अपने पति को छोड़ दिया? नहीं मैंने उनके साथ रहने का फैसला किया। अब चाहे कुछ भी हो जाए। फिर क्या हुआ,मैंने जिज्ञासावश पूछा? अंजली जी ने गहरी साँस ली।मेरे पति अनपढ़ नहीं थे।उनका दिमाग भी पूरी तरह सही नहीं था। बात-बात पर लोगों से कहा-सुनी करना,आम बात थी। झगड़ा करने से बाज नहीं आते थे। मैं आठ महीने

की गर्भवती थी।उस दिन उनका किसी से झगड़ा हुआ। झगड़ा इतना बढ़ गया कि उसने उनके सिर पर भारी पत्थर दे मारा।वह लहूलुहान हो गए,जब तक परिवार उनकी मदद के लिए पहुँचा।उनकी जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी।

मेरा रो-रोकर बुरा हाल था। पर अब क्या हो सकता था?

इसी तरह तीन महीने गुजर गए। मैं माँ बन चुकी थी। मेरे पास दो ही रास्ते थे।या तो अपनी माँ के पास लौट जाऊं या फिर अपनी सास को ही अपनी माँ समझ कर उनकी देखभाल करूँ।अंजली जी क्या आप अपनी माँ के पास लौट आई?आपने ठीक फैसला किया, क्योंकि सास कभी अपनी बहूँ को बेटी नहीं मान सकती है?यह बात मैं अच्छी तरह जानती हूँ।मैं बोले जा रही थी।क्योंकि मेरी मम्मी बताती थी कैसे उनकी सास उन्हें रात-दिन प्रताड़ित किया करती थी। मम्मी हमेशा कहती थी कि उनकी सास ने उनका जीना दूभर कर दिया था।मम्मी किसी भी कीमत पर अपनी सास से छुटकारा पाना चाहती थी।क्योंकि माँ उनसे बहुत दुःखी थी।रीमा यह आपकी राय हो सकती है। पर मैं इससे सहमत नहीं हूँ।मुझें माफ कीजियेगा,अंजली जी।

मैं आगे कुछ नहीं बोल पाई।रीमा,मेरी सास मुझें पहले भी बहुत पसंद थी। पर अब तो उनके सिवाय मेरा कोई सहारा नहीं था। मैं रात-दिन उनकी सेवा में जुट गई।

मैं सिलाई-कढ़ाई जानती थी।माँ जी मेरा पूरा सहयोग करती थी। मेरे बेटे को खूब लाड-प्यार करती थी।वह भी दादी के साथ बहुत खुश रहता था।मुझें आज भी वो रात याद हैं।जब मेरी सास ने कहा था, बेटी कब तक सिलाई-कढ़ाई करके अपना जीवन व्यतीत करोगी।तुम पढ़ी-लिखी हो। अपना जीवन सार्थक बनाओ। उन्होंने मेरा ऐसा उत्साह-वर्धन किया।मैंने लिखना शुरू कर दिया।वहाँ अधिक साधन नहीं थे।मैं माँ जी के साथ शहर में आ गई। उनके सहयोग से नई-नई राहे खुलती चली गई। मैं सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती चली गई।

आज मैं जो कुछ भी हूँ। उसका सारा श्रेय माँ जी के आशीर्वाद को ही जाता है। उनके आशीर्वाद के बिना यह सफलता संभव नहीं थीं।आज हर पत्र-पत्रिका में मेरी सफलता की कहानी छपती है। अंजली जी आज मैं समझ चुकी हूँ कि परिश्रम के साथ-साथ बड़ों का आशीर्वाद भी जरूरी है। काश मैं भी अपनी दादी---का आशीर्वाद प्राप्त कर सकती।अच्छा चलती हूँ,अंजली जी।शायद मुझें भी अपनो के आशीर्वाद की जरूरत हैं।घर जाते ही माँ के गले लग गई।माँ ने प्यार से मुझ पर ढ़ेर सारे आशीर्वादों की झड़ी लगा दी।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें